INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.428 (SJIF 2026)

विकसित भारत 2047 के निर्माण में शिक्षक शिक्षा की भूमिका

(Role of Teacher Education in Building Viksit Bharat 2047)

डॉ. शिवेंद्र सिंह चंदेल
सहायक प्रोफेसर, बी.एड.
राठ महाविद्यालय पैठाणी,
पौडी गढ़वाल (उत्तराखंड, भारत)
E-mail: shivendra111singh@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/01.2026-66649113/IRJHIS2601024

सारांश :

भारत वर्ष 2047 में अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण करेगा, और इसे विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के लिए शिक्षा को केंद्रीय भूमिका प्राप्त है। इस शोध पत्र का उद्देश्य तीन मुख्य बिंदुओं पर आधारित है 1. विकसित भारत 2047 की संकल्पना का अध्ययन, 2. इस लक्ष्य की प्राप्ति में आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण, और 3. इन चुनौतियों से निपटने में शिक्षक शिक्षा की भूमिका, । अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विकसित भारत 2047 केवल आर्थिक और तकनीकी प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक चेतना, मानव संसाधन विकास, समावेशन और नैतिक नेतृत्व शामिल हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणाएँ जैसे सर्वांगीण शिक्षा, जीवनोपयोगी कौशल, मूल्य और नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक जागरूकता शिक्षा प्रणाली में शामिल कर विकसित भारत के लक्ष्य को साकार किया जा सकता है। हालांकि वैश्वीकरण, डिजिटल विभाजन, सामाजिक असमानता और आधुनिक शिक्षा प्रणाली में मूल्य एवं सांस्कृतिक क्षरण जैसी चुनौतियाँ इस मार्ग में बाधक हैं। शिक्षक शिक्षा इन बाधाओं से निपटने में केंद्रीय भूमिका निभाती है। प्रशिक्षित शिक्षक समावेशी शिक्षण, डिजिटल साक्षरता, नैतिक और मूल्य आधारित शिक्षा, तथा सांस्कृतिक संवेदनशीलता के माध्यम से विद्यार्थियों में भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक कौशल का संतुलन स्थापित कर सकते हैं। अतः यह अध्ययन यह निष्कर्ष देता है कि गुणवत्तापूर्ण और प्रभावी शिक्षक शिक्षा ही विकसित भारत 2047 की संकल्पना को व्यवहारिक, स्थायी और समग्र रूप देने में सक्षम है।

मुख्य शब्द *: विकसित भारत 2047, शिक्षक शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा, समावेशी शिक्षा, सामाजिक उत्तरदायित्व*

प्रस्तावना :

भारत विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है, जहाँ शिक्षा को सदैव व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का प्रमुख माध्यम माना गया है। वैदिक काल की गुरुकुल परंपरा से लेकर आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली तक भारतीय शिक्षा दर्शन में नैतिकता, मानवीय मूल्य, सामाजिक उत्तरदायित्व और जीवनोपयोगी ज्ञान को विशेष महत्व दिया गया है। इसी कारण शिक्षा को राष्ट्र निर्माण की आधारशिला के रूप में देखा जाता रहा है।

वर्तमान समय में भारत 'विकसित भारत 2047' के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, जिसका उद्देश्य केवल आर्थिक विकास नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, समावेशन, लोकतांत्रिक मूल्यों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और गुणवत्तापूर्ण मानव संसाधन का विकास है। इस व्यापक लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षा की भूमिका केंद्रीय है और यह सर्वमान्य तथ्य है कि किसी भी शिक्षा व्यवस्था की सफलता काफी हद तक शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। कोठारी आयोग (1966) ने भी स्पष्ट किया था कि किसी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता उसके शिक्षकों की गुणवत्ता से निर्धारित होती है। इस संदर्भ में शिक्षक शिक्षा का महत्व अत्यंत बढ़ जाता है। शिक्षक शिक्षा का उद्देश्य केवल विषयवस्तु का ज्ञान देना नहीं, बल्कि शिक्षकों में प्रभावी शिक्षण कौशल, नैतिक संवेदनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व, नवाचारी सोच और व्यावसायिक प्रतिबद्धता का विकास करना है। गुणात्मक दृष्टिकोण से शिक्षक शिक्षा एक निरंतर प्रक्रिया है, जो शिक्षक के दृष्टिकोण, मूल्यों और व्यवहार को आकार देती है। प्रशिक्षित, संवेदनशील और जागरूक शिक्षक ही भावी पीढ़ी को सही दिशा देकर राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकते हैं। इक्कीसवीं सदी के वर्तमान दौर में वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति, डिजिटल शिक्षा और सामाजिक विविधता ने शिक्षक की भूमिका को और अधिक जटिल बना दिया है। अब शिक्षक से केवल पाठ्यक्रम पूरा करने की अपेक्षा नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, नैतिकता और सामाजिक चेतना विकसित करने की अपेक्षा की जाती है। ऐसे में शिक्षक शिक्षा को पारंपरिक सीमाओं से आगे बढ़कर परिवर्तनकारी और समावेशी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षक शिक्षा को नवाचार, बहुविषयकता, समावेशी शिक्षा और सतत व्यावसायिक विकास से जोड़ते हुए शिक्षक को सामाजिक परिवर्तन के सक्रिय अभिकर्ता के रूप में देखा है। इस प्रकार स्पष्ट है कि विकसित भारत 2047 के निर्माण में शिक्षक शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी पृष्ठभूमि में यह शोध पत्र गुणात्मक दृष्टिकोण से विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षक शिक्षा की भूमिका, उससे जुड़ी चुनौतियों तथा उसे अधिक प्रभावी बनाने के संभावित उपायों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

अध्ययन का महत्व :

प्रस्तुत शोध पत्र 'विकसित भारत 2047' की संकल्पना और उसकी प्राप्ति में शिक्षा, विशेषकर शिक्षक शिक्षा की भूमिका को समझने पर केंद्रित है। यह अध्ययन विकसित भारत 2047 को केवल एक आर्थिक या नीतिगत लक्ष्य के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यापक शैक्षिक एवं सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है। शोध से यह स्पष्ट होता है कि विकसित भारत 2047 का वास्तविक क्रियान्वयन तभी संभव है, जब शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया जाए और शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाए। यह अध्ययन विकसित भारत 2047 के मार्ग में आने वाली सामाजिक, शैक्षिक, तकनीकी एवं मूल्यगत चुनौतियों की पहचान करता है तथा यह विश्लेषण करता है कि प्रशिक्षित, संवेदनशील और नवाचारी शिक्षक इन चुनौतियों से निपटने में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। शोध से यह भी स्पष्ट होता है कि शिक्षक न केवल शैक्षिक गुणवत्ता को बेहतर बनाते हैं, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, समावेशन और राष्ट्र निर्माण की चेतना का विकास भी करते हैं। यह शोध शिक्षक–प्रशिक्षकों, शैक्षिक योजनाकारों और नीति–निर्माताओं के लिए उपयोगी है, क्योंकि यह शिक्षक शिक्षा के गुणात्मक सुधार की आवश्यकता को विकसित भारत 2047 के लक्ष्य से जोड़कर प्रस्तुत करता है। साथ ही, यह अध्ययन भविष्य के शैक्षिक अनुसंधानों के लिए एक सशक्त वैचारिक आधार प्रदान करता है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा :

- **विश्व बैंक** (2018) की रिपोर्ट विश्व विकास प्रतिवेदनरू शिक्षा की संभावनाओं को साकार करने हेतु सीखना में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया कि शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता सीधे तौर पर विद्यार्थियों की सीखने की उपलब्धि और मानव संसाधन विकास को प्रभावित करती है। रिपोर्ट के अनुसार विकसित अर्थव्यवस्था की दिशा में बढ़ने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली में संरचनात्मक सुधार अनिवार्य हैं।
- **शर्मा** (2018) के अनुसार गुणवत्तापूर्ण शिक्षक शिक्षा राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाती है तथा विद्यार्थियों में नेतृत्व, नवाचार और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करती है। विकसित भारत 2019 की परिकल्पना को साकार करने में ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो ज्ञान के साथ–साथ मूल्य और कौशल का संवर्धन कर सकें।
- **पटेल** (2019) के शोध में पाया गया कि शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में कौशल–आधारित प्रशिक्षण को शामिल करने से विद्यार्थियों में उद्यमिता एवं नवाचार की प्रवृत्ति बढ़ती है। यह अध्ययन विकसित भारत के आर्थिक एवं तकनीकी विकास में शिक्षक शिक्षा की भूमिका को रेखांकित करता है।
- **मिश्रा** (2020) का मूल्य एवं नागरिक शिक्षा के संदर्भ में अध्ययन दर्शाता है कि शिक्षक शिक्षा में संवैधानिक मूल्य, नैतिकता और सामाजिक समरसता को सम्मिलित करना अत्यंत आवश्यक है। ऐसे शिक्षक सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक चेतना और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करते हैं।
- **कुमार एवं सिंह** (2021) ने एनईपी–2020 के संदर्भ में शिक्षक शिक्षा पर किए गए अध्ययन में बताया कि नीति में बहु–विषयक शिक्षक शिक्षा, चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम तथा सतत व्यावसायिक विकास पर विशेष बल दिया गया है। अध्ययन के अनुसार, ये सुधार 21वीं सदी के कौशलों से युक्त शिक्षकों के निर्माण में सहायक होंगे, जो विकसित भारत 2047 की आधारशिला बन सकते हैं।
- **वर्मा और गुप्ता** (2022) के डिजिटल युग में शिक्षक शिक्षा पर अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्ब्ज् आधारित शिक्षक प्रशिक्षण, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और इसमदकमक समंतदपदह शिक्षण–अधिगम की प्रभावशीलता को बढ़ाते हैं। डिजिटल रूप से दक्ष शिक्षक ही 2047 के भारत को तकनीकी रूप से सशक्त बना सकते हैं।
- **यादव एवं शुक्ला** (2022) ने उच्च शिक्षा में शिक्षण दक्षता के अध्ययन में पाया कि शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में शिक्षण कौशल, कक्षा प्रबंधन, मूल्यांकन तकनीक और संप्रेषण कौशल का समावेश शिक्षण गुणवत्ता को बढ़ाता है। यह अध्ययन संकेत देता है कि उच्च शिक्षा में सक्षम शिक्षक तैयार किए बिना विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करना संभव नहीं है।
- **यूनेस्को** (2023) ने अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अपने प्रतिवेदन में कहा है कि सतत विकास लक्ष्यों ;ैक्ळ–4) की प्राप्ति के लिए शिक्षक शिक्षा प्रणाली का सुदृढ़, समावेशी और भविष्य–उन्मुख होना अनिवार्य है। यह दृष्टिकोण विकसित भारत 2047 की संकल्पना से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है।
- **गुप्ता एवं पाल** (2023) ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में अपने शोध में शिक्षक की भूमिकाओं एवं उत्तरदायित्वों का विश्लेषण किया है। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि 2020 शिक्षक को केवल पाठ्यवस्तु तक सीमित न रखकर उसे नवाचारकर्ता, मार्गदर्शक और सामाजिक परिवर्तन के वाहक के रूप

में देखती है। यह दृष्टिकोण विकसित भारत 2047 की सामाजिक–आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप है।

- **वार्ष्णेय एवं कुमारी (2025)** ने अपने अध्ययन में विकसित भारत 2047 के लिए शिक्षक व्यावसायिक विकास के संदर्भ में यह स्पष्ट किया कि शिक्षक का सतत व्यावसायिक विकास राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। अध्ययन में 'कर्मयोगी दृष्टिकोण' को अपनाने पर बल दिया गया है, जिसके माध्यम से शिक्षक न केवल ज्ञान प्रदाता बल्कि राष्ट्र निर्माण के सक्रिय सहभागी बनते हैं। यह शोध विकसित भारत 2047 की अवधारणा को शिक्षक शिक्षा से सीधे जोड़ता है।
- **कुमारी (2025)** ने समावेशी शिक्षा के संदर्भ में बिहार राज्य के परिप्रेक्ष्य में किए गए अपने अध्ययन में यह बताया कि विविध पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के लिए शिक्षकों की तैयारी एवं दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है। अध्ययन यह दर्शाता है कि शिक्षक शिक्षा में समावेशिता, समानता और सामाजिक न्याय के तत्वों को शामिल करना विकसित भारत 2047 की सामाजिक संरचना को मजबूत करता है।

इन सभी अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक शिक्षा केवल शैक्षणिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र निर्माण, मानव संसाधन विकास, सामाजिक समरसता और आर्थिक प्रगति से गहराई से जुड़ी हुई है। विकसित भारत 2047 की संकल्पना को साकार करने के लिए शिक्षक शिक्षा में सतत सुधार, नीति–समर्थन और शोध–आधारित दृष्टिकोण अपनाना अनिवार्य है।

शोध के उद्देश्य :

1. विकसित भारत 2047 की संकल्पना का अध्ययन करना ।
2. विकसित भारत 2047 को प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना ।
3. विकसित भारत 2047 को प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियों से निपटने में शिक्षक शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना ।

1. विकसित भारत 2047 की संकल्पना का अध्ययन :

- **ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य :**

  भारत वर्ष 2047 में अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण करेगा। यह अवसर केवल अतीत की उपलब्धियों को स्मरण करने का नहीं, बल्कि भविष्य के लिए एक सशक्त राष्ट्रीय दृष्टि विकसित करने का भी है। इसी संदर्भ में "विकसित भारत 2047" की संकल्पना सामने आई है, जो भारत को आर्थिक रूप से समृद्ध, सामाजिक रूप से न्यायपूर्ण, सांस्कृतिक रूप से सशक्त तथा शैक्षिक और नैतिक रूप से उन्नत राष्ट्र के रूप में स्थापित करने की परिकल्पना करती है (भारत सरकार, 2020)।

- **समग्र विकास की दृष्टि :**

  विकसित भारत 2047 की अवधारणा को केवल आर्थिक या भौतिक विकास तक सीमित नहीं किया जा सकता। आर्थिक आत्मनिर्भरता और तकनीकी उन्नति के साथ–साथ मानव संसाधन विकास, सामाजिक समरसता, लोकतांत्रिक मूल्य, पर्यावरणीय संतुलन और सांस्कृतिक चेतना इसके अनिवार्य घटक हैं। इस प्रकार यह संकल्पना मानव–केंद्रित और बहुआयामी विकास मॉडल प्रस्तुत करती है (यूनेस्को, 2015)।

- **शैक्षिक दृष्टिकोण :**

शैक्षिक दृष्टि से विकसित भारत 2047 की संकल्पना का विशेष महत्व है। शिक्षा को राष्ट्र विकास का आधार माना जाता है, क्योंकि यही जागरूक, कुशल और जिम्मेदार नागरिकों का निर्माण करती है। विकसित भारत की परिकल्पना ऐसे नागरिकों की अपेक्षा करती है जो ज्ञानवान होने के साथ–साथ नैतिक, संवेदनशील, नवाचारी और सामाजिक रूप से उत्तरदायी हों। इस संदर्भ में गुणवत्तापूर्ण एवं मूल्यपरक शिक्षा विकसित भारत 2047 की रीढ़ के रूप में उभरती है (कोठारी आयोग, 1966)।

- **सामाजिक समावेशन :**

सामाजिक दृष्टि से विकसित भारत 2047 का आशय एक ऐसे समाज से है जहाँ समान अवसर, सामाजिक न्याय और समावेशन सुनिश्चित हो। इसमें जाति, लिंग, क्षेत्र, भाषा या आर्थिक स्थिति के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो। शिक्षा को सामाजिक असमानताओं को कम करने तथा वंचित वर्गों को मुख्यधारा से जोड़ने का प्रभावी माध्यम माना गया है (भारत सरकार, 2020)।

- **सांस्कृतिक और नैतिक दृष्टि :**

सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में विकसित भारत 2047 भारतीय ज्ञान परंपरा और नैतिक मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन पर बल देता है। वैश्वीकरण और आधुनिकता के इस दौर में सांस्कृतिक पहचान बनाए रखना आवश्यक है। यह संकल्पना आधुनिक विज्ञान और तकनीक को अपनाते हुए भी शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति, नैतिकता और जीवन मूल्यों को सुदृढ़ करने पर बल देती है (शर्मा, 2018)।

- **तकनीकी और वैज्ञानिक दृष्टि :**

तकनीकी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विकसित भारत 2047 का लक्ष्य नवाचार, अनुसंधान और डिजिटल सशक्तिकरण में भारत को अग्रणी बनाना है। डिजिटल शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, हरित प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक अनुसंधान इसके प्रमुख आधार हैं। इन क्षेत्रों में प्रगति तभी संभव है, जब शिक्षा प्रणाली समयानुकूल होकर विद्यार्थियों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करे (एनसीईआरटी, 2021)।

- **भारतीय ज्ञान परंपरा का दृष्टिकोण :**

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध शैक्षिक एवं दार्शनिक परंपराओं में से एक रही है। इसमें ज्ञान के साथ–साथ नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और जीवनोपयोगी कौशल का समन्वय किया गया है। विकसित भारत 2047 की संकल्पना यह सुनिश्चित करती है कि आधुनिकता और तकनीकी प्रगति के साथ–साथ सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का संरक्षण शिक्षा प्रणाली में बना रहे (शर्मा, 2018)।

- **मानव संसाधन विकास :**

मानव संसाधन विकास विकसित भारत 2047 की संकल्पना का केंद्रीय तत्व है। किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसके नागरिक होते हैं। यह संकल्पना ऐसे नागरिकों के निर्माण पर बल देती है जो रोजगार योग्य होने के साथ–साथ उद्यमशील, नवाचारी और सामाजिक रूप से जिम्मेदार हों। इस लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षा प्रणाली और शिक्षक निर्णायक भूमिका निभाते हैं (यूनेस्को, 2015)।

इस प्रकार विकसित भारत 2047 को एक दीर्घकालिक राष्ट्रीय दृष्टि के रूप में देखा जा सकता है, जिसमें शिक्षा को परिवर्तन का प्रमुख माध्यम माना गया है। यह स्पष्ट करता है कि 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता, पहुँच और प्रासंगिकता पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। इसी कारण विकसित

भारत 2047 के अध्ययन में शिक्षक शिक्षा की भूमिका को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि शिक्षक ही इस संकल्पना को व्यवहार में रूपांतरित करने वाले प्रमुख कर्ता हैं (भारत सरकार, 2020)।

2. विकसित भारत 2047 को प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियाँ का अध्ययन :

- **आर्थिक असमानता और संसाधन वितरण :**

  विकसित भारत 2047 की दिशा में सबसे बड़ी चुनौती आर्थिक असमानता है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच संसाधनों, रोजगार और अवसरों में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है, जिससे समावेशी विकास प्रभावित होता है। साथ ही विभिन्न राज्यों के बीच बजट आवंटन तथा औद्योगिक और कृषि निवेश में असंतुलन विकास की गति को धीमा कर सकता है (भारत सरकार, 2020)।

- **शिक्षा की गुणवत्ता और समावेश :**

  यद्यपि शिक्षा तक पहुँच में वृद्धि हुई है, फिर भी गुणवत्तापूर्ण और समावेशी शिक्षा सभी वर्गों तक समान रूप से उपलब्ध नहीं हो पाई है। विशेष रूप से ग्रामीण, आदिवासी और वंचित वर्गों के लिए योग्य शिक्षकों, आधुनिक शिक्षण संसाधनों और आधारभूत सुविधाओं की कमी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है (एनसीईआरटी, 2021)।

- **डिजिटल और तकनीकी विभाजन :**

  विकसित भारत 2047 में डिजिटल साक्षरता और तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देना आवश्यक है, किंतु डिजिटल उपकरणों और इंटरनेट की असमान पहुँच के कारण डिजिटल विभाजन उत्पन्न हो रहा है। इससे विद्यार्थियों के बीच अवसरों की असमानता बढ़ती है और अनुसंधान एवं नवाचार की संभावनाएँ सीमित हो जाती हैं (यूनेस्को, 2015)।

- **सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन :**

  वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के इस दौर में सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण एक गंभीर चुनौती है। यदि शिक्षा केवल तकनीकी और कौशल आधारित रह जाए, तो नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक पहचान और जिम्मेदार नागरिकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, जिससे सामाजिक असंतुलन उत्पन्न होने की संभावना रहती है (शर्मा, 2018)।

- **राजनीतिक और नीति–निर्माण संबंधी बाधाएँ :**

  शिक्षा नीतियों के क्रियान्वयन, संसाधन वितरण, शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास योजनाओं में असंगति के कारण अपेक्षित शैक्षिक परिणाम प्राप्त नहीं हो पाते। इसके अतिरिक्त, नीतिगत निर्णयों में विलंब और योजनाओं की प्रभावी निगरानी का अभाव भी प्रमुख चुनौती है (भारत सरकार, 2020)।

- **पर्यावरणीय और प्राकृतिक चुनौतियाँ :**

  जलवायु परिवर्तन, जल संकट, प्रदूषण तथा बाढ़ और सूखा जैसी प्राकृतिक आपदाएँ आर्थिक और सामाजिक विकास को प्रभावित करती हैं। ये चुनौतियाँ शिक्षा प्रणाली और मानव संसाधन विकास को भी अप्रत्यक्ष रूप से बाधित करती हैं। अतः शिक्षा में पर्यावरणीय साक्षरता और सतत विकास की अवधारणा को शामिल करना आवश्यक है (यूनेस्को, 2015)।

- **जनसंख्या और सामाजिक दबाव :**

  तेजी से बढ़ती जनसंख्या शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार व्यवस्था पर दबाव डालती है। बड़े कक्षा आकार, सीमित संसाधन और शिक्षकदृविद्यार्थी अनुपात में असंतुलन शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। इसके साथ ही गरीबी, लैंगिक असमानता और जातिगत भेदभाव जैसे सामाजिक दबाव शिक्षा तक समान पहुँच में बाधा उत्पन्न करते हैं (भारत सरकार, 2020)।

इन सभी चुनौतियों के बीच शिक्षक शिक्षा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। प्रशिक्षित, संवेदनशील और नवाचारी शिक्षक ही विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिकता, समावेशन और नवाचार की भावना विकसित कर सकते हैं। यदि शिक्षक प्रशिक्षण और शिक्षा प्रणाली इन चुनौतियों के अनुरूप सुदृढ़ की जाए, तो विकसित भारत 2047 के लक्ष्यों की प्राप्ति संभव है (एनसीईआरटी, 2021,यूनेस्को, 2015)।

3. विकसित भारत 2047 को प्राप्त करने में चुनौतियों से निपटने में शिक्षक शिक्षा की भूमिका :

• आर्थिक असमानता और संसाधन वितरण :

आर्थिक असमानता से निपटने में शिक्षक शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में समावेशी शिक्षा, सामाजिक न्याय और समान अवसरों के मूल्यों को शामिल किया जाना आवश्यक है। प्रशिक्षित शिक्षक विद्यार्थियों में सहयोग, समानता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित कर सकते हैं, जिससे दीर्घकाल में आर्थिक असमानता के सामाजिक प्रभावों को कम किया जा सकता है (यूनेस्को, 2015)। इसके अतिरिक्त, शिक्षक सामुदायिक शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में शिक्षा की पहुँच बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं।

• शिक्षा की गुणवत्ता और समावेश :

गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करने में शिक्षक शिक्षा की भूमिका निर्णायक है। शिक्षक प्रशिक्षण में विविध शिक्षण विधियाँ, मूल्यपरक शिक्षण कौशल और विद्यार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं को समझने की क्षमता का विकास किया जाना चाहिए। प्रशिक्षित शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले, आदिवासी और ग्रामीण विद्यार्थियों को मुख्यधारा में लाने में सक्षम होते हैं, जिससे शिक्षा प्रणाली अधिक सुदृढ़ बनती है (एनसीईआरटी, 2021)।

• डिजिटल और तकनीकी विभाजन :

डिजिटल और तकनीकी विभाजन को कम करने के लिए शिक्षक शिक्षा में डिजिटल साक्षरता और नवाचारी प्रशिक्षण आवश्यक है। प्रशिक्षित शिक्षक डिजिटल उपकरणों और ऑनलाइन संसाधनों का प्रभावी उपयोग कर विद्यार्थियों को तकनीकी दक्षता और नवाचार के लिए प्रेरित कर सकते हैं। डिजिटल समावेशन पर केंद्रित शिक्षक शिक्षा ग्रामीण और वंचित छात्रों को समान अवसर प्रदान करने में सहायक होती है (यूनेस्को, 2015)।

• सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन :

सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियों से निपटने में शिक्षक शिक्षा नैतिक और सांस्कृतिक चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षक प्रशिक्षण में भारतीय संस्कृति, मूल्य शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व को समाहित करना आवश्यक है। प्रशिक्षित शिक्षक विद्यार्थियों में सहिष्णुता, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक सम्मान की भावना विकसित कर सकते हैं, जिससे वैश्वीकरण के प्रभावों के बावजूद सामाजिक संतुलन बना रहता है

(शर्मा, 2018)।

• राजनीतिक और नीति–निर्माण संबंधी बाधाएँ :

नीति–निर्माण संबंधी चुनौतियों से निपटने में शिक्षक शिक्षा सहायक सिद्ध होती है। शिक्षक प्रशिक्षण में नीति जागरूकता, नेतृत्व क्षमता और योजना क्रियान्वयन से संबंधित कौशलों का विकास किया जाना चाहिए। प्रशिक्षित शिक्षक विद्यालय स्तर पर शैक्षिक नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन में सहयोग कर सकते हैं, जिससे शिक्षा प्रणाली की दक्षता बढ़ती है (भारत सरकार, 2020)।

• पर्यावरणीय और प्राकृतिक चुनौतियाँ :

पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान में शिक्षक शिक्षा ‘म्कनबंजपवद वित ेनेजंपदंइसम क्मअमसवचउमदज (म्ैक्)’ की अवधारणा को बढ़ावा देती है। प्रशिक्षित शिक्षक विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता, सतत विकास, आपदा प्रबंधन और हरित प्रौद्योगिकी के प्रति समझ विकसित कर सकते हैं। इससे पर्यावरणीय ज्ञान के साथ–साथ सामाजिक और नैतिक उत्तरदायित्व की भावना भी सुदृढ़ होती है (यूनेस्को, 2015)।

• जनसंख्या और सामाजिक दबाव :

जनसंख्या वृद्धि और सामाजिक दबावों से निपटने में शिक्षक शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान देती है। शिक्षक प्रशिक्षण में मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक कौशल और विद्यार्थियों के समग्र विकास पर बल दिया जाना चाहिए। प्रशिक्षित शिक्षक बड़े कक्षा आकार और विविध पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों के बीच भी शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रख सकते हैं। साथ ही, लैंगिक समानता, जातिवाद और सामाजिक दबावों के प्रति जागरूकता विकसित करना भी शिक्षक शिक्षा का महत्वपूर्ण पक्ष है (भारत सरकार, 2020)।

• भारतीय ज्ञान परंपरा की प्राप्ति :

शिक्षक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में भारतीय दर्शन, नैतिकता और संस्कृति का समुचित विकास किया जा सकता है। प्रशिक्षित शिक्षक वंचित और विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को भी भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ने में सक्षम होते हैं। डिजिटल माध्यमों और आधुनिक संदर्भों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभावी प्रसार किया जा सकता है। शिक्षक प्रशिक्षण में मूल्य शिक्षा और नैतिक नेतृत्व पर बल देकर विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित किया जा सकता है (यूनेस्को, 2015, शर्मा, 2018)।

इस प्रकार, विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षक शिक्षा केवल शैक्षिक प्रशिक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीकी चुनौतियों से निपटने का एक सशक्त माध्यम है। प्रशिक्षित और संवेदनशील शिक्षक विद्यार्थियों को न केवल शिक्षित करते हैं, बल्कि उन्हें जिम्मेदार, नवाचारी और सामाजिक रूप से जागरूक नागरिक बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसी कारण शिक्षक शिक्षा को विकसित भारत 2047 की दिशा में केंद्रीय स्थान प्राप्त है (एनसीईआरटी, 2021, यूनेस्को, 2015)।

विवेचना :

विकसित भारत 2047 के निर्माण में शिक्षक शिक्षा की भूमिका का गुणात्मक विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा केवल ज्ञान के हस्तांतरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज, संस्कृति, आर्थिक विकास और नैतिक मूल्यों के संवर्धन का एक प्रभावी माध्यम है (कोठारी, 1966, यूनेस्को, 2015)। प्रस्तुत अध्ययन से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि विकसित भारत 2047 के लक्ष्यों की प्राप्ति अनेक बहुआयामी चुनौतियों से जुड़ी हुई है, जिनमें

आर्थिक असमानता, शिक्षा की गुणवत्ता, डिजिटल विभाजन, सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन, नीतिगत एवं प्रशासनिक बाधाएँ, पर्यावरणीय संकट तथा सामाजिक दबाव प्रमुख हैं। अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि इन चुनौतियों से निपटने में शिक्षक शिक्षा की भूमिका केंद्रीय है। प्रशिक्षित और संवेदनशील शिक्षक न केवल विद्यार्थियों को शैक्षिक ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि उनमें नैतिकता, सामाजिक चेतना और नवाचारी दृष्टिकोण का भी विकास करते हैं। उदाहरणस्वरूप, डिजिटल और तकनीकी विभाजन को कम करने के लिए शिक्षक शिक्षा में डिजिटल साक्षरता और नवाचार से संबंधित प्रशिक्षण आवश्यक है (यूनेस्को, 2015)। इसी प्रकार, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के प्रति जागरूक नागरिक तैयार करने हेतु शिक्षक प्रशिक्षण में मूल्य शिक्षा और सांस्कृतिक चेतना को समाहित करना अनिवार्य है (शर्मा, 2018)। इसके अतिरिक्त, शिक्षक शिक्षा नीतिगत क्रियान्वयन और पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। प्रशिक्षित शिक्षक विद्यालय स्तर पर शिक्षा नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन के साथ–साथ विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता और उत्तरदायित्व की भावना विकसित कर सकते हैं, जिससे शिक्षा प्रणाली अधिक सुदृढ़ और अनुकूलनशील बनती है (भारत सरकार, 2020, एनसीईआरटी, 2021)।

अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि विकसित भारत 2047 की संकल्पना केवल आर्थिक या भौतिक प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें समावेशन, सामाजिक न्याय, मानव संसाधन विकास और सांस्कृतिक संवेदनशीलता जैसे आयाम भी निहित हैं। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षक शिक्षा एक मजबूत आधारशिला के रूप में उभरती है। शिक्षकों के प्रभावी प्रशिक्षण और सतत व्यावसायिक विकास पर ध्यान देकर न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया जा सकता है, बल्कि एक जिम्मेदार, संवेदनशील और नवाचारी समाज के निर्माण की दिशा में भी सार्थक योगदान दिया जा सकता है।

निष्कर्ष :

सार रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षक शिक्षा ही वह कुंजी है, जो विकसित भारत 2047 की दिशा में सभी चुनौतियों को पार करने में मदद कर सकती है। यदि शिक्षक प्रशिक्षण गुणवत्ता, नवाचार, डिजिटल दक्षता, सांस्कृतिक जागरूकता और मूल्य शिक्षा पर केंद्रित होगा, तो विकसित भारत 2047 केवल एक संकल्पना नहीं, बल्कि व्यवहारिक और स्थायी वास्तविकता बन सकता है। अतः शिक्षक शिक्षा को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाना और इसे समग्र विकास के रणनीतिक हिस्से के रूप में अपनाना आवश्यक है।

संदर्भ :

1. Kothari, D. S. (1966). ***Report of the Education Commission 1964–66***. Ministry of Education, Government of India.
2. UNESCO. (2015). ***Education 2030: Incheon Declaration and Framework for Action***. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.
3. Sharma, R. (2018). ***Cultural Preservation and Education in India***. New Delhi: Sage Publications.
4. Sharma, R. K. (2018). Teacher education and nation building. ***Indian Journal of Educational Research***, 12(2), 45–52.
5. World Bank. (2018).***World Development Report 2018: Learning to Realize Education's Promise***. Washington, DC: World Bank.

6. Patel, S. R. (2019). Teacher education and skill development. ***Journal of Educational Studies***, 10(1), 67–73.
7. Ministry of Education, Government of India. (2020). ***National Education Policy 2020***. New Delhi
8. Government of India. (2020). ***National Education Policy 2020***. Ministry of Education, Government of India.
9. Mishra, K. (2020). Role of teacher education in value development. ***Indian Journal of Value Education***, 5(2), 23–29.
10. NCERT. (2021). ***Teacher Education Curriculum Framework***. National Council of Educational Research and Training.
11. Kumar, A., & Singh, P. (2021). Reforms in teacher education in the context of NEP 2020. ***Educational Quest***, 12(3), 189–195.
12. Verma, S., & Gupta, N. (2022). Teacher education in the digital era. ***International Journal of Digital Education***, 4(1), 34–41.
13. University Grants Commission (UGC). (2022). ***Transforming Higher Education in India***. New Delhi: UGC.
14. Yadav, R. P., & Shukla, D. K. (2022). ***Study of teaching competency skills among teachers in higher education***. Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 19(3), 604–608.
15. UNESCO. (2023). ***Global education monitoring report: Technology in education***. Paris: UNESCO.
16. Varshney, P., & Kumari, A. (2025). ***Teacher professional development for Viksit Bharat 2047: A Karmayogi approach***. Journal of the Oriental Institute, 74(3), 11–20. https://doi.org/10.8224/journaloi.v74i3.911
17. Verma, M., & Pandey, M. P. (2024). **Study of the effect of teacher efficacy on the educational achievement and emotional development of middle level students**. *ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 5(6), 2226–2229. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.2983*
18. Gupta, A., & Pal, S. (2023). ***National Education Policy 2020 and teacher responsibilities: An analysis***. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.5614
19. Kumari, K. (2025). ***Preparation and perspectives of teachers for inclusive education: A study from Bihar***. Humanities Journal, 7(2).